❖ ओ३म् ❖

# आर्ष-ज्योतिः

## श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष-महाविद्यालय-न्यास

का

द्विभाषीय मासिक मुखपत्र

आश्विन-कार्तिकमासः, विक्रम संवत् - २०७३

वर्ष : ८ अंक : १०० अक्टूबर : २०१६ मूल्य : ५.०० रुपये

ज्योतिष्कृणोति सूनरी

संरक्षक - संस्थापक

**स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती**

❖

परामर्शदाता

**डॉ. रघुवीर वेदालङ्कार**

❖

मुख्य सम्पादक

**डॉ. धनञ्जय आर्य (अवैतनिक)**

❖

सम्पादक

**चन्द्रभूषण आर्य**

**डॉ. रवीन्द्र आर्य**

❖

कार्यकारी सम्पादक

**ब्र. शिवदेव आर्य**

❖

व्यवस्थापक

**ब्र. अनुदीप आर्य**

**ब्र. कैलाश आर्य**

❖

कार्यालय

**श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल**

दून वाटिका-२, पौंधा, देहरादून (उत्तराखण्ड)

जंगमवाणी -९४१११०६१०४,८८१०००५०९६

ई-मेल : arsh.jyoti@yahoo.in

website: www.pranawanand.org

**सदस्यता शुल्क**

आजीवन - १०००.०० रुपये

वार्षिक - ५०.०० रुपये/ एक प्रति - ५ रुपये

## विषय-क्रमणिका


| विषयः | पृष्ठम् |
|---|---|
| सम्पादकीय | २ |
| क्या वृक्षों में जीव हैं? | ४ |
| बेटी आंगन का फूल है | ७ |
| पञ्चमहायज्ञ | ८ |
| क्या मनुष्य का ध्येय भौतिक सुख है? | १० |
| यज्ञ-माहात्म्य | १३ |
| संस्कृतभाषा महर्षिदयानन्दश्च | १६ |
| जीवोत्पत्तिविवेचनम् | १७ |
| सामान्यज्ञान-दर्पणम् | १९ |
| संस्कृत-शिक्षणम् | २० |


शारदीय नवसस्येष्टि दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

**न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः**

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

# सम्पादक की कलम से...

## हे पाकिस्तान... अब क्या होगा?

अभी हाल में ही अमेरिका में हुए सम्मेलन में पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री बहुत ही आशा व विश्वास के साथ गये थे किन्तु परिणाम कुछ अलग ही दिखे। पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री ने कश्मीर को अन्तरराष्ट्रीय मुद्दा बनाकर भारत की घोर निन्दा की किन्तु वो निन्दा स्वयं के लिए ही भारी पड़ गयी। संयुक्त राष्ट्र के इस आयोजन में नवाज शरीफ की प्रत्येक बात का भारतीय प्रवक्ताओं के तर्कसंगत उत्तर ने पाकिस्तान का मुँह बन्द कर दिया।

पाकिस्तान तो पानी-पानी तब हुआ जब उसका हमेशा साथ देने वाले देशों ने ही उसके अनुमान से विपरीत बातें कहीं। सभी देशों ने एक स्वर से स्वर मिलाते हुए कहा कि पाकिस्तान को अपनी आतंकी गतिविधियों से बाज आना चाहिए और कश्मीर का मुद्दा जो नवाज शरीफ ने उठाया है उसके लिए कहा गया कि ये मुद्दा इनका खुद का है, अतः समस्या का समाधान स्वयं ही खोजना चाहिए। यहाँ तक कि पाकिस्तान का हमेशा साथ देने वाला देश चीन भी इस मुद्दे पर तटस्थ रूख अपना रहा है। पाकिस्तान की बुद्धि तब और ज्यादा चकराई जब अन्तरराष्ट्रिय इस्लामिक संगठन के प्रमुख देशों संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, कतर, अफगानिस्तान, बांग्लादेश आदि ने भी स्वर में स्वर मिलाये। जो अमेरिका आज तक पाकिस्तान को पालता व पोसता रहा है, वही आज अपनी संसद में ऐसा नियम पारित करा रहा है, जो बतायेगा कि पाकिस्तान आतंकवाद का जनक है। दुनिया के किसी भी देश ने पाकिस्तान के साथ सहानुभूति नहीं दिखायी। पाकिस्तान को अपने मुँह की खानी पड़ी। विश्वसमुदाय ने पाकिस्तान को सजा दी है, वो सराहनीय है किन्तु भारतसरकार ने भी इससे बहुत कुछ सीखा और सही समय को पहचाना।

उरी हमले की निन्दा देश के सभी दल एक स्वर में कर रहे हैं। निन्दा करनी भी चाहिए। भारत अपनी बहुत-सी विशेषताओं के लिए सदा प्रसिद्ध रहा है। जिसमें यह भी है कि भारत बहुत ही सोच समझ कर प्रत्येक कदम उठाता है। क्योंकि भारत एक शान्तिप्रिय राष्ट्र है, अतः शान्ति बनाये रखना इसका परम कर्तव्य स्वतः ही बन जाता है किन्तु शान्तिप्रिय होने का तात्पर्य यह भी नहीं है कि कोई हमारे एक गाल पर थप्पड़ मारे और हम दूसरा गाल आगे बढ़ाते हुए यह कहे कि ये भी बाकि है। सहने की भी कोई सीमा होती है, जब सीमा पूर्ण हो जाती है तब कुछ निश्चयात्मक सोचना ही पड़ता है। ऐसा ही कुछ भारत को सोचना और करना पड़ा।

उरी में पाकिस्तानी हमले के बाद भारत में उच्चस्तर पर हर पैमाने से मंथन किया गया है। सब जानते हैं कि अब योजनाओं से बात नहीं बनने वाली है। पाकिस्तान से बातचीत और संवाद का समय समाप्त हो चुका है क्योंकि लातों के भूत बातों से नहीं मानते। इसीलिए २६-२७ सितम्बर को भारत की ओर से जो किया गया वो करना आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य ही हो गया था। भारतीय सेना ने अपनी बहादुरी दिखाते हुए पाक अधिकृत कश्मीर (पी.ओ.के.) क्षेत्र के तीन किलो मीटर अन्दर जाकर आतंकवादियों के ७ लॉन्चिग पैड्स पर हमला करते हुए लगभग ३८ आतंकवादियों को मार गिराया। पूरा देश भारतीय सेना के इस पराक्रमपूर्ण कृत्य की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा कर रहा है।



This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

इस कार्य को अंजाम देने से सेना की इच्छाशक्ति, क्षमता और तैयारी में कोई भी कमजोरी नहीं दिखायी दी, कमी थी तो केवल राजनीतिक इच्छाशक्ति की, किन्तु इस बार इच्छाशक्ति की पराकाष्ठा ही हो गयी थी।

प्रधानमन्त्री माननीय श्री नरेन्द्रमोदी जी आदि देश के नीतिनियन्ताओं ने अब स्पष्ट कर दिया है कि हमारे पास इच्छाशक्ति तो पहले से ही थी किन्तु हम सही समय की प्रतीक्षा में थे। इस समय सम्पूर्ण विश्व भारत की हाँ में हाँ मिला रहा है। भारत ने यह कदम उठाने से पूर्व २२ देशों को सूचित कर अवगत कराया कि अब हम ये कदम उठाने जा रहे हैं। आज पाकिस्तान के साथ कोई भी देश खड़ा नहीं हो पा रहा है। विश्वस्तर पर भारत ने जो अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की है, ये उसी का परिणाम है।

पाकिस्तान अपनी छोटी-छोटी आतंकी गतिविधियों से यह समझने लगा था कि भारत को सब कुछ सहन करने की आदत हो गयी है। पाकिस्तान मानने लगा कि कि भारत सरकार दब्बू है, ये कुछ नहीं कर पायेगी। शायद पाकिस्तान बार-बार भूल जाता है, उसे अपना इतिहास उठाकर देखना चाहिए। पाकिस्तान के ऐसे कुकृत्यों से परेशान होकर हमें ना चाहते हुए भी पाकिस्तान से चार बार युद्ध करने पड़े, जिसमें पाकिस्तान की बुरी तरह हार हुयी। पाकिस्तान को वो पन्ने तो जरुर ही उठाकर देखने चाहिए जब सन् १९७१ में हमारे भारतीय नौजवान फौजी भाईयों ने कमाल ही कर दिया था। बांग्लादेश विभाजन के दौरान उनके ९० हजार फौजियों को बंधक बना लिया था, यह देख उस देश के होश उड़ गये थे, और वह हमारे पैरों में गिड़गिड़ा कर नाक रगड़ रहा था। हम भी बड़े दयावान् हैं, हमे उनकी दशा को देखकर दया आ गयी और उन सब बन्दी बनाये गये सैनिकों को मुक्त कर दिया। यह देख सम्पूर्ण विश्व आश्चर्यचकित रह गया। लिहाजा ईंट का जवाब पत्थर से देने का अवसर आ गया था। अब तो सब्र का समय समाप्त होना ही था। कहा गया है कि बीमारी और दुश्मनी शुरु होते ही समाप्त करने का उपाय सोचना चाहिए। हमें आतंकवाद की बीमारी और पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देश की दुश्मनी बहुत लम्बे समय से झेलनी पड़ रही है। इसके परिणाम सदा घातक ही बनते जा रहे थे। कुछ तो भारत सरकार को ठोस कदम उठाने ही थे।

हालांकि भारत सदा से ही शान्ति की स्थापना करने की बात करता है लेकिन पाकिस्तान ऐसा वातावरण चाहता ही नहीं है। अब भारत ने भी **शठे शाठ्यं समाचरेत्** की नीति अपना कर उसे चारों ओर से घेर लिया है। वो कुछ भी कर ले हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। हमारी जल-थल और वायु सेनाएँ अब सन्नद्ध हैं। हिन्द महासागर में हमने पाकिस्तान को ऐसा घेरा है कि वो जो अपने हथियार डालने पर स्वतः ही मजबूर हो रहा है। यदि गलती से पाकिस्तान भारत पर परमाणु डालने की सोचता भी है तो हम उसके परमाणु से ही उसका सदा सदा के लिए नामो-निशान दुनिया के नक्शे से मिटा देंगे। हमारे सारे अस्त्र-शस्त्र तैयार हैं हम सिर्फ प्रतीक्षा कर रहे हैं। यदि अब भी पाकिस्तान अपनी गलतियाँ करने से नहीं रुकेगा तो उसका परिणाम बहुत ही भयंकर होगा।

पाकिस्तान के लिए अभी भी समय है। समय रहते यदि इस घटना से कुछ सबक नहीं लिया तो स्थितियाँ उसके अनुकूल नहीं होगीं।

आज पाकिस्तान को सावधान हो जाना चाहिए। क्योंकि अब प्रतीक्षा का लम्बा सफर समाप्त हो चुका है। अब निर्णय पाकिस्तान के हाथ में है कि वह क्या चाहता है? भारत पाकिस्तान के साथ हमेशा से ही दोनों निर्णयों से साथ आगे बढ़ने को तैयार है किन्तु दोगली नीति अब स्वीकार नहीं।

**शिवदेव आर्य**
गुरुकुल पौन्धा, देहरादून
मो.-८८१०००५०९६
ई.मेल-shivdevaryagurukul@gmail.com



This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

# क्या वृक्षों में जीव हैं?

❑ डॉ. रघुवीर वेदालंकार...✍

**सम्पादकीय टिप्पणी** - **'क्या वृक्षों में जीव है?'** इस विषय पर भूतकाल में आर्य समाज के दो समादरणीय विद्वानों पूज्य स्वामी दर्शनानन्द जी तथा पण्डित गणपति शर्मा के मध्य शास्त्रार्थ हुआ था। शास्त्रार्थ अनिर्णीत ही रहा था। इसलिए इस विषय पर पुनः गम्भीर चिन्तन की आवश्यकता है। चिन्तन मनुष्य का धर्म है, अतः चिन्तन की धारा चलती रहनी चाहिए।अभी भी आर्यसमाज में दोनों पक्षों को मानने वाले व्यक्ति विद्यमान हैं तो क्यों न इस विषय को निर्णय की ओर ले जाया जाए। दोनों पक्षों के अपने-अपने तर्क एवं प्रमाण हैं। हमें सत्यग्राहिता के लिए यत्नशील होना चाहिए, क्योंकि 'सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।' इस लेख में डॉ. रघुवीर वेदालंकार जी द्वारा दोनों पक्षों के तर्क एवं प्रमाणों का निष्पक्ष रूप से विवेचन किया है। अन्य व्यक्ति भी पक्षपातशून्य, दुराग्रहरहित होकर किसी भी पक्ष के सम्बन्ध में अपने विचार दे सकते हैं, तभी निर्णय के निकट पहुँचा जा सकेगा, क्योंकि **'तर्कप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिः'**। आपके पक्ष को भी पत्रिका में बिना किसी दुराग्रह के प्रकाशित किया जायेगा। हम आपके पक्ष की प्रतीक्षा में हैं....

**-शिवदेव आर्य**

वृक्षों में जीव के पक्ष में प्रबल प्रमाण सत्यार्थप्रकाश के नवम समुल्लास का दिया जाता है कि महर्षि दयानन्द ने मनुस्मृति के अनुसार पाप-पुण्य की गति को बतलाते हुए मनुस्मृति १२/२ श्लोक का अर्थ करते हुए वृक्षादि स्थावर का जन्म लिखा है। इसीप्रकार मनु एक श्लोक का अर्थ लिखा है 'जो अत्यन्त तमोगुणी हैं, वे स्थावर वृक्ष....जन्म को प्राप्त करते हैं। इसी आधार पर कहा जाता है कि स्वामी जी वृक्षों में जीव मानते हैं उपर्युक्त दोनों मूल श्लोकों में केवल 'स्थावर' शब्द है, वृक्षादि नहीं। अतः हिन्दी में वृक्षादि शब्द प्रक्षिप्त तथा अशुद्ध प्रतीत होता है। सत्यार्थप्रकाश में ऐसी अशुद्धियाँ अनेक है। यहाँ आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के ८५ वें संस्करण में पृ.- २२३ पर 'दशवें समुल्लास' लिखा है। यहाँ दशवें यह सर्वथा अशुद्ध है।

स्वामी जी ने तो त्रयोदश समुल्लास में आयत २१ की समीक्षा में स्पष्ट लिखा है 'जो वृक्ष जड़ पदार्थ है'। एक ही ऋषि दो स्थानों पर परस्पर विरुद्ध बातें नहीं लिख सकता। जड़ पदार्थ में जीव या आत्मा तो कोई भी नहीं मानेगा। मनुस्मृति के स्थावर पद पर तथा उस पूरे प्रसंग पर हम बाद में विचार करेंगे उससे पहले अन्य हेतु इस प्रकार हैं -

१. स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश के अन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकरण में स्पष्ट लिखा है 'जो इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख और ज्ञानादि गुणयुक्त अल्पज्ञ नित्य है, उसी को जीव मानता हूँ। इससे स्वामी जी की जीव विषयक मान्यता सुस्पष्ट है। यह लक्षण गोतममुनि के अनुसार है। **इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिङ्गम्।** (न्या.सू.) यहाँ पर जीव आत्मा के लक्षण कहे गये हैं - इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख-दुःख तथा ज्ञान। ये लक्षण जिस पर भी घट जाएँ, उसे ही जीव मानना चाहिए, अन्य को नहीं। पूर्व पक्ष के अनुसार कहा जाता है कि वृक्षों में भी ये लक्षण घट जाते हैं



This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

यथा – वृक्ष को भी पानी, प्रकाश, हवा की इच्छा होती है। इसके अभाव में वृक्ष या पौधा सूख जाता है। **द्वेष** – दक्षिण अफ्रीका में एक वृक्ष ऐसा बतलाया जाता है कि उसके नीचे पहुँचने पर वह अपनी शाखाओं को मनुष्य के गले में लपेट देता है तथा व्यक्ति का रक्त सोख लेता है। **प्रयत्न** – वृक्ष भी बढ़ते हैं। **सुख-दु:ख** – मुर्ह-मुर्ह का पौधा अंगुली लगाने से मुरझा जाता है। सुख-दु:ख के विषय में यह भी कहा जाता है कि वृक्षों को सुख-दु:ख का भान इसलिए नहीं होता कि वे सुषुप्ति अवस्था में हैं। यह बात सर्वथा ही कपोल कल्पित है। महर्षि दयानन्द ने वृक्षों में सुषुप्ति अवस्था कहीं भी नहीं लिखी है। इन पूर्वपक्षीय हेतुओं पर विचार किया जाता है –

**१) इच्छा** – इच्छा चेतन का धर्म है, जड़ का नहीं। इच्छा तथा आवश्यकता में स्पष्ट अन्तर है। एक बीज को अंकुरित होने के लिए मिट्टि-पानी आदि की आवश्यकता तो है, किन्तु इसे उसकी इच्छा नहीं कहा जा सकता। इच्छा वह होती है जो करने वाले कर्ता के अधीन होती है। मेरे सामने भोजन रखा है, भूख भी है। अत: जड़ शरीर को उसकी आवश्यकता तो है किन्तु मुझ चेतन की यदि इच्छा नहीं है तो मैं उसे नहीं खाऊँगा। खाने पर भी इच्छानुसार थोड़ा या अधिक खा सकता हूँ। वृक्षों के साथ ऐसा नहीं है। भूमि में पड़कर बीज को अंकुरित होना ही होगा। अंकुरित होने पर भी उसकी जड़ भूमि में नीचे को ही जायेगी तथा अंकुर ऊपर को ही चलेगा। एक बीज इसमें किञ्चित् भी परिवर्तन नहीं कर सकता, क्योंकि यह उसका धर्म या स्वभाव है, इच्छा नहीं। इच्छा को छोडा जा सकता है, परिवर्तित किया जा सकता है किन्तु धर्म को नहीं। अग्नि का धर्म जलना है तो वह जलेगी – जलाएगी ही।

क) इच्छा प्रत्येक इकाई की पृथक्-पृथक् होती है। यथा – सभी मनुष्यों की इच्छाएँ एक जैसी नहीं हो सकती, किन्तु जन्म-मरण प्राणी मात्र का समान है, किसी का पृथक्-पृथक् नहीं। वृक्षों में ऐसा नहीं पाया जाता। हवा या आंधी चलने पर सभी वृक्षों को हिलना-डुलना ही पडेगा तथा हवा के शान्त हो जाने पर सभी वृक्ष निष्कम्प हो जाते हैं। इन कार्यों में वृक्ष परिवर्तन नहीं कर सकते, क्योंकि इनमें इच्छा है ही नहीं। यह चेतन का धर्म है, जड़ का नहीं।

ख) पशु-पक्षी भी चेतन हैं। अत: उनमें भी इच्छा पायी जाती है। आप हाथ में रोटी या घास लेकर कुत्ते-बैल आदि पशुओं की ओर चलें तो वह भी पूँछ हिला कर, सिर हिलाकर अपनी इच्छा उसके ग्रहणार्थ प्रकट करता है तथा आपकी ओर चलता है। वृक्षों के पास खाद-पानी लिए खड़े रहें, वृक्ष उसके ग्रहणार्थ इच्छा प्रकट नहीं करेगा।

**२) द्वेष**- द्वेष भी चेतन का ही धर्म है। एक लघु चींटी भी पीडा पहुँचने पर तुरन्त ही डंक मारती है, काटती है क्योंकि उसे दबना पसन्द नहीं। पशु-पक्षियों तथा मनुष्यों में तो यह द्वेष स्पष्ट रूप से देखा ही जाता है। वृक्षों में यह धर्म नहीं है। सम्पूर्ण वृक्ष को काट देने पर भी वह इसका प्रतिकार नहीं करता। यह धर्म सभी वृक्षों में समान है।

**३) प्रयत्न** – प्रयत्न भी पूर्णत: कर्त्ता के अधीन होता है। वह चाहे तो उसे करे चाहे तो न करे। वृक्ष स्वेच्छा से कुछ भी प्रयत्न नहीं कर सकते-जबकि एक लघु कीट भी भोजनार्थ प्रयत्न रत देखा जाता है। प्रयत्न के पश्चात् प्रत्येक प्राणी विश्राम भी करता है। वृक्षो में ऐसा कुछ भी नही देखा जाता। उनके हिलने-डुलने तथा पानी पीने को ही प्रयत्न नही कह सकते क्योंकि ये तो उनके प्राकृत कर्म है। इनमें वृक्षों की इच्छा कारण नहीं है।



This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

**४) सुख-दुःख**- प्रत्येक चेतन प्राणी यहां तक कि एक लघु कीट को भी सुख-दुःख की अनुभूति होती हैं तथा वह दुःख के परित्याग एवं सुखप्राप्ति का यत्न करता है। वृक्षों को यह अनुभूति नहीं होती। इसके पूर्वपक्ष में कहा जाता है कि वृक्ष सुषुप्ति-अवस्था में है। अतः उन्हें सुख-दुःख की अनुभूति नहीं होती। यह तर्क ठीक नहीं, क्योंकि सुषुप्ति में तो समाधि तथा मोक्ष के समान आनन्द आता है। सूत्र है **समाधिसुषुप्तिमोक्षेषु ब्रह्मरूपता** अर्थात् समाधि, सुषुप्ति तथा मोक्ष में व्यक्ति ब्रह्मरूपता को प्राप्त कर लेता है। यदि वृक्षों में सुषुप्ति मानी जाए तो हम मनुष्यों से तो वृक्ष ही श्रेष्ठ है क्योंकि वे ५०-१०० वर्षों तक सुषुप्ति में ब्रह्मानन्द का अनुभव करते रहते हैं। मनु के अनुसार अत्यन्त तमोगुणी ही स्थावर योनियों को प्राप्त करते हैं तो वृक्षों में यह सुषुप्ति = ब्रह्मानन्द की अवस्था कैसे मानी जा सकती है? दूसरे - वृक्ष आजीवन फल, छाया, लकड़ी देकर संसार का उपकार करते हैं। वे सम्पूर्ण जीवन में कोई भी दुष्कर्म मनुष्यों के समान नहीं करते। यदि इस समय उनकी सुषुप्ति अवस्था मानी जाए तो सूखने या नष्ट होने पर वृक्ष सीधे मोक्ष में ही जायेगे। अतः वृक्ष योनि मनुष्यों से श्रेष्ठ माननी होगी। तीसरे - यह बात भी है कि सुषुप्ति में गया मनुष्य भी शरीर में पिन आदि चुभोने से जाग जाता है किन्तु वृक्षों की सभी शाखाओं तथा तने को काटने पर भी वह न तो आह करता है तथा न ही जागता है तो यह कैसे सुषुप्ति है? वस्तुतः यह विचार ही पूर्णतः मिथ्या है कि वृक्ष सुषुप्ति अवस्था में है। मनु तथा महर्षि दयानन्द ने कहीं भी वृक्षों में सुषुप्ति का उल्लेख नहीं किया।

**५) ज्ञान** - ज्ञान भी जीवात्मा का गुण है किन्तु वृक्षों में किसी ने भी ज्ञान की सत्ता नहीं मानी। **श्वास तथा जीवन** - कहा जाता है कि वृक्ष श्वास लेते हैं। अतः उनमें जीव है। श्वास तो लुहार की धौंकनी भी लेती है। यह जीवात्मा का लक्षण नहीं। जड़ वृक्ष भी श्वास लेते हैं। वक्षादि को धूप, हवा आदि की भी आवश्यकता होती है, तभी वे बढ़ते हैं। यह बढ़ना-घटना सूखना-जीवन का लक्षण है, जीव का नहीं। वृक्षों में जीवन है, जीव नहीं।

ऐसा कहा जाता है कि वैज्ञानिक जगदीशचन्द्रवसु वृक्षों में जीव मानते थे। यह कथन सत्य नहीं है। प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार लिखते हैं कि जब उन्होंने वसु महोदय से भेंट कर यह प्रश्न उठाया तो वसु महोदय बोले कि वृक्षों में जीवन (Life) तो है, आत्मा (Soul) नहीं।[१] वृद्धि-ह्रास, विकास, बढ़ना-घटना जीवन के लक्षण हैं। आत्मा वह है जो शरीर में आकर कर्मों को करता तथा उसके फल भोगता है। वृक्षों में यह नहीं घटता। जीवन तथा जीव के अन्तर को गर्भोपनिषद् के इस कथन से समझा जा सकता है **'सप्तमे मासे जीवेन संयुक्तो भवति'**। वहाँ पर माता-पिता के संयोग से लेकर नवम मास तक सभी महीनों के भ्रूण की पृथक्-पृथक् स्थिति बतलायी गयी हैं। आठवें महीने तक वह बढ़ता तो रहता है, क्योंकि उसमें जीवन है किन्तु जीव का प्रवेश नवम मास में ही होता है। इसी आधार पर डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार लिखते हैं कि 'वृक्ष-वनस्पति में चेतना है, जीवन है, आत्मा नहीं। घास-पात में जीवन है, किन्तु उसमें कर्म का भोग करने वाला आत्मा नहीं है।

दक्षिण अफ्रीका के जिस मानवरक्तशोषक वृक्ष की चर्चा पहले की गयी है, उससे वृक्ष में जीव तथा इच्छा सिद्ध होते क्योंकि जड़ पदार्थों का अपना-अपना स्वभाव होता है। विद्युत् भी हाथ लगाने से शरीर का रक्त सुखा कर प्राणी को मार डालती है तो क्या बिजली में भी जीव मानेगें। कुछ ओषधियाँ



This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

कुछ फुट की दूरी पर होने पर शरीर पर प्रभाव डाल देती है। चमडा धूप में डालने से सिकुड जाता है तथा पानी में डालने से फूल जाता है। पूर्णिमा के चन्द्रमा को देखकर समुद्र मे ज्वर आता ही है, किन्तु उक्त उदाहरणों में कोई भी जीव नहीं मानता। पपीते का उदाहरण भी दिया जाता है कि नर पपीते में पुरुष धर्म तथा मादा पपीते में मादाधर्म होता है। दोनों के पराग परमाणु संयुक्त होने से ही मादा पपीते में फल लगते हैं। यह उदाहरण भी ठीक नहीं। नर पपीते में भी छोटे-छोटे २-४ फल आ जाते हैं। दूसरे - यह संयोग का धर्म अन्य वृक्षों में नहीं है। उत्पत्ति का धर्म सम्पूर्णजाति का समान होना चाहिए। यथा - सम्पूर्ण मनुष्यजाति, पशुजाति, पक्षीजाति की उत्पत्ति में यह धर्म समान रूप से पाया जाता है। अत: पपीते का स्वभाव ही ऐसा है। वहाँ आत्मा नहीं है। मनुस्मृति में यही लिखा है कि ऐसे जघन्य प्राणी स्थावर योनि को प्राप्त करते हैं। पर्वत भी स्थावर है तो क्या वहाँ भी वृक्षों की तरह जीव मानना पडेगा? वृक्षादि में रहने वाले जो कीडे, यथा गूलर के फल में गुनगे होते हैं। यही स्थावरयोनि का आशय है। स्वयं वृक्ष जीवयुक्त नहीं होता है। स्थावर पर्वतों में भी ऐसे अनेक शरीरधारी जीव रहते हैं।

**-पूर्व प्रो., रामजस कालेज,**
**दिल्ली विश्वविद्यालय**

**टिप्पणी-**

१. वैदिकविचारधारा की वैज्ञानिक अवधारणा।

# बेटी आंगन का फूल है

**- ब्र. सूर्य प्रताप आर्य**
**उत्तरमध्यमा द्वितीय वर्ष**

बेटा कुल का दीपक तो बेटी आंगन का फूल है।
हत्यारो बेटी को ना मारो बेटी ही तुम्हारा मूल है॥
बेटों के सम ना आज बेटी का कोई मान है।
माँ-बाप भ्रूण हत्या करते उसका ना कुछ भी ध्यान है।
पढूँ-लिखँ बनूँ महान् बेटी के दिल में अरमान है।
पर आया यौवन बिक गई बेटी ना कोई त्राण है।
आज के युग के लोगों की कैसी ये भूल है॥
बेटा कुल का दीपक.....
कलियुग के मात-पिता समझते है बेटी को एक बला।
होगीं ना दोनों आखें इक आँख से देखोगें कैसे भला।
आई जबानी बेटी का बचपन तो रो धो के टला।
कर शादी दहेज में झोंका बेटी चल दी सबको रूला।
आई विदाई रोई माँ चुभता सबके दिल में शूल है॥
बेटा कुल का दीपक.....
यदि बेटी पैदा होती घर में डूब जाते है सब शोक में।
सोचो होंगी न बेटी अगर दुनिया में तो बेटे कैसे लाओगे।
बेटी के जीवन में ना सुख है दु:ख ही उसके पास है।
बेटी के जीवन में फूल नहीं है काटों का ही वास है।
आखिर क्या एक लड़की का लड़की होना कोई भूल है॥
बेटा कुल का दीपक.....
बेटी रब की दुआ है बेटी रास्ता है खुशी का।
बेटी सिन्दूर के लिए मांग है सहारा है परिवारों का।
बेटी माँ का अहसास है वरदान है उसको खुदा का।
**सूर्य** के **प्रताप** सम बेटी रत्न (नीलम) है इस जहाँ का।
बेटी बचाओ उसको पढ़ाओं बेटी ही आंगन की धूल है॥
बेटा कुल का दीपक.....

**घर बैठे पढ़ने के लिए क्लिक करें - www.pranwanand.org**



This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

# पञ्चमहायज्ञ

(स्वामी देवव्रत सरस्वती के कतिपय प्रवचनों का संग्रह)

❑ संकलनकर्ता-आचार्य डॉ. धनञ्जय.....✍

क्रमशः.... **बलिवैश्वदेव यज्ञ**

संसार में जड़-चेतन जो भी पदार्थ या प्राणी जगत है उस मनुष्य मात्र का किसी न किसी अंश में उपकार होता है। उनमें देवत्व का कुछ न कुछ अंश विद्यमान रहता है। पर्यावरण को सन्तुलित बनाये रखने के लिये इस यज्ञ की विशेष आवश्यकता है।

**केवलाघो भवति केवलादी** अकेला खाने वाला पापी होता है। इसके लिये ऋषियों ने बलि वैश्वदेव यज्ञ का विधान किया है। पाकशाला में जब भोजन बन जाये उस समय क्षार-लवण, मिर्च, मसाले से रहित घृत , मिष्ट, अन्नादि की आहुतियां गृहपत्नी या गृहस्वामी दे। एक प्रकार से यह भोजन की परीक्षा करने की पद्धति भी है। जिस खाद्य पदार्थ को अग्नि में डालने से सुगन्ध उत्पन्न हो वह भक्ष्य और सत्त्वगुण वाला जानना चाहिये। शेष राजसिक या तामसिक है। जैसे मिर्च, प्याज, लहसुन, अण्डे, मांसादि को अग्नि में डालने पर दुर्गन्ध और खांसी उठने लगती है अतः ये सब त्याज्य है। इसी प्रकार विषाक्त पदार्थ की परीक्षा भी अग्नि द्वारा एवं अन्य पशु-पक्षियों को खिलाकर की जाती है। कौटिल्य अर्थशास्त्र में इसका विस्तार से वर्णन किया है।

आजकल घरों में गैस से खाना बनाते हैं। ऐसी स्थिति में कोई लोहे का पात्र गैस पर रख उसके ऊपर आहुतियाँ दी जा सकती है। प्रथम दस मन्त्रों से जिन विश्वेदेवों के लिये आहुतियाँ दी जाती है इनका अभिप्राय यही है कि इस अन्न से परिपक्व भोजन में जिन देवों ने भाग लिया है, उनके निमित्त मैं ये आहुतियाँ प्रदान कर रहा हूँ। अग्नि, सोम, परमेश्वर की शक्तियाँ रोगों को दूर करने वाले वैद्य, भूमि,, श्रमिक, प्रजा का पालक परमेश्वर, द्यावा-पृथिवीस्थ प्राणी एवं शक्तियां और सबका हित करने वाले परमात्मा का स्मरण करते हुए मैं ये आहुतियाँ दे रहा हूँ।

न केवल आहुति अपितु इनके निमित्त अन्न भाग निकालने का विधान इसलिये किया है कि अन्न उत्पादन में जो भी लोग या राज्य की व्यवस्था सहयोगी हैं उनका आभार प्रकट किया जाये इन्द्र राजा एवं उसके सानुग अर्थात् राज्य कर्मचारी तक मैं ऋणी हूँ और उनके लिये अन्न का भाग निकालता हूँ। इसी भांति न्यायाधीश, आरक्षीदल का अध्यक्ष, खाद्यविभाग का अध्यक्ष, मरुत्, जल सिञ्चन की व्यवस्था करने वाले, वनस्पति विभाग के व्यवस्थापक, शिल्पकार, सभी सुखों या कल्याण करने वाली ईश्वरीय शक्ति, ब्राह्मण, शिल्पी, दिन एवं रात्रि में विचरण करने वाले प्राणी और जो बच गये हैं उन कृमि, कीट, पतंगों के लिये मैं यह अन्न का भाग दे रहा हूँ। इसके अतिरिक्त अपने माता-पितादि पितरों को प्रथम भोजन कराके फिर आप भोजन करने का विधान बलिवैश्वदेव यज्ञ में किया जाता है। इसके पश्चात् -

**शुनां च पतितानां च स्वपचां पापरोगिणाम्।**
**वायसानां कृमीणां च शनकैर्निर्वपेद् भुवि॥**

-मनु. ३/९२

कुत्तों, कंगालों, कुष्ठ से पीड़ित, कौवे आदि पक्षियों और चींटी आदि कृमियों के लिये भी छः भाग अलग-अलग बांट कर दे देना जिससे उनका भी भला हो अर्थात् सब प्राणियों का हित करते हुये ही भोजन करना बलिवैश्वदेव यज्ञ कहलाता है।

## अतिथियज्ञ

जो मनुष्य पूर्ण विद्वान्, परोपकारी, जितेन्द्रिय, धर्मात्मा, सत्यवादी, छल-कपट से रहित और नित्य भ्रमण करके विद्या, धर्म का प्रचार और अविद्या-अधर्म की



This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

निवृत्ति सदा करते रहते हैं, उनको अतिथि कहते हैं। सचमुच वह बड़ा भाग्यशाली है जिसके घर ऐसे विद्वान्, धार्मिक सत्य के उपदेशक पधारें। ये वीतराग संन्यासी ही होते हैं। जब तक उत्तम अतिथि जगत् में नहीं होते तब तक उन्नति भी नहीं होती। उनके सब देशों में भ्रमण करने और सत्योपदेश करने से पाखण्ड की वृद्धि नहीं होती और सर्वत्र गृहस्थों को सहज से सत्य विज्ञान की प्राप्ति होती रहती है और मनुष्य मात्र में एक ही धर्म स्थिर रहता है। बिना अतिथियों के सन्देहनिवृत्ति नहीं होती। सन्देह निवृत्ति के बिना दृढ़ निश्चय भी नहीं होता। निश्चय के बिना सुख कहाँ?

**अतिथि देवो भव। यो विद्याद् ब्रह्म प्रत्यक्षं परूंषि यस्य संभारा ऋचो यस्यानुक्यम्। सामानि यस्य लोमानि यजुर्हृदयमुच्यते परिस्तरमिद्धविः।। यद्धा अतिथिपतिरतिथीन् प्रतिपश्यति देवयजनं प्रेक्षते।।** (अथर्व. ९/६/१-३)

(यः) जो अतिथि को (प्रत्यक्ष ब्रह्म) ब्रह्मवेत्ता या ब्रह्म स्वरूप जानकर उन्हें आदरपूर्वक घर में लाकर सेवा करता है वह मानों साक्षात् देवयज्ञ ही कर रहा है। जिस अतिथि के अंगों के जोड़ (पंरूंषि यस्य संभाराः) यज्ञ की सामग्री के समान (आनूक्यम् ऋचः) मेरूदण्ड ऋचाओं के समान (सामानि यस्य लोमानि) साम लोम सदृश (यजुर्हृदयमुच्यते) यजुर्वेद हृदय और (परिस्तरणमिद्धविः) आसन हवि के समान है। अतिथि को अभिवादन करना दीक्षा के समान और पैर धुलाने के लिये लाया जल यज्ञ के प्रणीता पात्र में रखे जल जैसा है। जो अतिथि को ऊंचे आसन, चारपाई आदि पर बिठाता है वह मानो स्वर्ग लोक में अपना आसन स्थिर कर लेना है।

**एते वै प्रियाश्चाप्रियाश्चर्त्विजः स्वर्गं लोकं गमयन्ति यदतिथयः।** (अथर्व ९/६/२-३)

निश्चय से जो अतिथि है वह चाहे प्रिय हो या अप्रिय परन्तु है ऋत्विक् अर्थात् वेदों का विद्वान् वह अतिथि यज्ञ कराने वाले स्वर्ग अर्थात् सुख प्राप्ति की ओर ले जाते हैं।

**एष वा अतिथिर्यच्छोत्रियस्तस्मात् पूर्वो नाश्नीयात्। अशिताक्त्यतिथावश्नीद् यज्ञस्य सामत्वाय यज्ञस्याविच्छेदाय तद् व्रतम्।।**

(अथर्व० ९/६/३८-८)

जो वेदज्ञ विद्वान् अतिथि घर आये तो उसे भोजन कराकर फिर स्वयं भोजन करे जिससे कि इस परम्परा का उच्छेद न हो (तद् व्रतम्) इसे नियम ही बना लें।

जो अतिथि से पहले खाता है वह मानो अपने इष्ट एवं आपूर्त का ही भक्षण करता है।

गृहस्थ की गाड़ी में जब कभी घर्षण या मनमुटाव होने लगता है तब विद्वान्, ब्राह्मण, साधु-सन्तों के उपदेश तेल ग्रीस का कार्य करते हैं।

जहां विद्वानों का आदर होगा वहीं तो उनका आना-जाना बना रहेगा। यज्ञ के तीन अर्थों में देवपूजा से अभिप्राय अतिथि यज्ञ ही है। इसके अभाव में पढ़े-लिखे लोग वानप्रस्थ या उपदेश-प्रवचन करने से बचते हैं। यदि उनका आदरमान और आतिथ्य सत्कार होवे तो समाज को उनकी निःशुल्क सेवा मिल सकेगी और उनसे मार्गदर्शन प्राप्त कर लेगा। अपने कर्तव्यों का पालन करते रहेंगे।

**- आचार्य**
**गुरुकुल पौन्धा, देहरादून**

---

**युक्ताहारविहारस्य, युक्तचेष्टस्य कर्मसु।**
**युक्तस्वप्नावबोधस्य, योगो भवति दुःखहा।।** (गीता-६/१७)

अर्थात् जिसका भोजन युक्त (सन्तुलित मात्रा में), दिनचर्या व्यवस्थित, धर्मानुकूल आजीविका के साधन और समय पर निद्रा तथा जागरण हों, ऐसे व्यक्ति का योगाभ्यास सब दुःखों को दूर करनेवाला होता है।



This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

# क्या मनुष्य का ध्येय भौतिक सुख है?

❑ मनमोहन आर्य...✍

मनुष्य जीवन का क्या लक्ष्य है? यदि आजकल के सम्पन्न लोगों के जीवन पर दृष्टि डालें तो लगता है कि उनके जीवन का लक्ष्य उचित व अनुचित तरीकों से धन कमाना और उसका अधिक से अधिक संचय कर सुख सुविधाओं की वस्तुओं को प्राप्त करना, देश विदेश की यात्रायें करना, घूमना-फिरना ही है। **प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या यही सब कुछ मनुष्य जीवन का उद्देश्य और लक्ष्य है?** इस प्रश्न का उत्तर जानने से पूर्व मनुष्य जीवन पर भी दृष्टिपात करना उचित होगा। माता-पिता से जन्म लेकर शिशु रूप में मनुष्य इस संसार में आता है और शारीरिक वृद्धि को प्राप्त करते हुए शैशवावस्था से किशोर व युवा बनता है। आरम्भिक जीवन के कुछ वर्ष शिक्षा प्राप्ती में व्यतीत होते है, जहां मनुष्य को जीवन व संसार विषयक ज्ञान कराया जाता है। स्कूलों में पढ़ाया जाने वाला ज्ञान सांसारिक विषयों तक ही सीमित होता है। इसमें शरीर व संसार के बारे में ही विद्यार्थियों को बताया व समझाया जाता है। इस शिक्षा का परिणाम यह होता है कि मनुष्य नाना प्रकार के स्वास्थ्यवर्धक व स्वादिष्ट भोजन करने के साथ ही अल्प व अज्ञान के कारण मांस, अण्डे व अनेक अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करता है और धनोपार्जन कर सुख-सुविधाओं की वस्तुओं का संग्रह व संचय कर उनसे सुख भोगने को ही अपने जीवन का चरम लक्ष्य मान लेता है। युवावस्था के बाद वृद्धावस्था आती है और उसमें किसी रोग आदि से ग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। **इन लोगों को अपनी आत्मा व संसार को बनाने व चलाने वाली सत्ता के विषय में सोचने का अवकाश ही नहीं मिलता।** यदि मिले भी तो उसे बताने व समझाने वाले सच्चे ज्ञानी, विद्वान व मित्र उपलब्ध नहीं होते। धर्म व अपने मत के आचार्यों व लोगों का भय व अज्ञानता भी मन व मस्तिष्क पर सवार रहती है। कोई किसी को बताने का प्रयास भी करे तो यह दूसरे मत का व्यक्ति है, कहकर उसकी उपेक्षा कर दी जाती है। इस अविद्या के कारण आज सारा संसार, लगभग ९९ प्रतिशत, अविद्या अर्थात् ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के यथार्थ ज्ञान व इसके प्रयोजनों व होने वाल लाभों से अपरिचित, अनभिज्ञ व वंचित हैं। इसमें दोष किसका है, इस पर विचार करने पर हमें लगता है कि सभी मतों के आचार्यों व उनके अनुयायियों का जो सत्य की खोज में किंचित भी श्रम, पुरुषार्थ व तप नहीं करते हैं।

अब प्रश्न सामने आता है कि ईश्वर व जीवात्मा हैं भी या नहीं? ईश्वर है तो दिखाई क्यों नहीं देता? उसको कैसे जान सकते हैं? इसका उत्तर तो ज्ञानी लोग जो ईश्वर को यथार्थ रूप में जानते हैं यही देते हैं कि **ईश्वर अभौतिक व अत्यन्त सूक्ष्म वा सर्वातिसूक्ष्म होने से हमारी आंख या चक्षु आदि इन्द्रियों से दिखाई नहीं देता।** सभी मनुष्यों व प्राणियों के शरीरों में एक जीवात्मा होती है। अन्य मत के लोग जीवात्मा को soul या रूह कहते हैं परन्तु इसको वेदों के ज्ञानियों के अतिरिक्त अन्य मनुष्य यथार्थ रूप में जानते नहीं हैं। कोई भी मनुष्य अल्पज्ञ व एकदेशी होने के कारण किसी भी विषय का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। उसे अपने से अधिक ज्ञानियों की आवश्यकता होती है। पूर्ण ज्ञानी केवल सर्वव्यापक व सर्वज्ञ परमात्मा ही है। ज्ञानी मनुष्यों को यह ज्ञान सद्ग्रन्थों के स्वाध्याय व चिन्तन-मनन आदि अनेक कार्य व तप करने से प्राप्त होता है। यह पूर्णतया सत्य है कि ईश्वर व जीवात्मा का यथार्थ ज्ञान केवल वेदों व वैदिक साहित्य के अध्ययन, चिन्तन, मनन व ध्यान उपासना आदि साधनों को करके ही प्राप्त किया जा सकता है। संसार में जहां व जिस मत सम्प्रदाय में ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप का जितना भी ज्ञान है वह सब वहां



This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

सुदूर अतीत काल में वेदों से ही पहुंचा है। अतः सद्ज्ञान की प्राप्ति केवल वेदों के अध्ययन व उसके विद्वानों की संगति से ही हो सकती है। **वेद ईश्वर व जीवात्मा को एक चेतन व सूक्ष्म सत्ता बताते हैं। ईश्वर सर्वज्ञ और सर्वव्यापक है और जीवात्मा अल्पज्ञ, एकदेशी व ससीम है। यह जीव अणु परिमाण वाला है। ईश्वर व जीव अत्यन्त सूक्ष्म होने के कारण आंखों से दिखाई नहीं देते। किसी भी वस्तु को उसके गुणों व लक्षणों को देखकर व अनुभव कर ही जाना जाता है। इसी प्रकार से उस वस्तु का होना भी विज्ञान द्वारा सिद्ध माना जाता है। सृष्टि, प्राणियों व संसार में नाना प्रकार के असंख्य पदार्थों की उत्पत्ति व उपस्थिति को देखकर ईश्वर की सिद्धि होती है। इनका बनाने वाला व अस्तित्व में लाने वाला केवल और केवल एक ईश्वर ही है।** इसी प्रकार मनुष्यों व सभी प्राणियों के शरीरों को चलाने वाला एक जीवात्मा होता है जो कि अनात्म व अचेतन शरीर से पूर्णतया पृथक् एक आत्म, चेतन पदार्थ व तत्व है। ईश्वर व आत्मा के स्वरूप को विस्तार से जानने के लिए वेदों सहित ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों का अध्ययन किया जा सकता है जहां इनका विशद यथार्थ वर्णन सुलभ होता है जिसे पढ़कर व जानकर पूरा सन्तोष जिज्ञासु व अध्येता को होता है। संक्षेप में इतना बता दें कि ईश्वर **सच्चिदानन्दस्वरूप है। वह निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। ईश्वर ज्ञानस्वरूप, प्रकाशस्वरूप, सुखस्वरूप, कर्म-फल के बन्धों से पूर्णतया मुक्त, जन्म-मरण आदि से मुक्त, जीवात्माओं को उनके कर्मानुसार जन्म व मृत्यु प्रदान करने सहित उन्हें सुख व दुःख देने वाला है। ईश्वर जीवात्मा के भीतर भी व्यापक है और जीव ईश्वर से व्याप्य है। यही ईश्वर सभी मनुष्यों द्वारा उपासनीय है। जीवात्मा सत्य व चेतन सत्ता है। यह अनादि, अनुत्पन्न, अविनाशी, अमर, अल्पज्ञ, एकदेशी, अणु परिमाण, ससीम, जन्म-मरण के चक्र में आबद्ध, कर्मानुसार सुख व दुखों का भोक्ता, कर्म करने में स्वतन्त्र व फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था में परतन्त्र है।** इन विषयों के अधिक ज्ञान के लिए सत्यार्थ प्रकाश, योग व सांख्य दर्शन सहित वेदाध्ययन की शरण लेनी चाहिये।

जीवात्मा व ईश्वर का स्वरुप जान लेने पर मनुष्य जीवन का मुख्य कर्तव्य ईश्वर प्राप्ति वा ईश्वर साक्षात्कार को जानकर उसकी उपासना से ईश्वर की निकटता प्राप्त करना है। ईश्वर की निकटता से दुगुर्ण, दुर्व्यसन और दुःखों की निवृत्ति व भद्र गुणों की प्राप्ति होती है। आत्मा का बल बढ़ता है। निरन्तर लम्बी अवधि तक उपासना से ईश्वर का साक्षात्कार भी होता है जिससे वह जन्म व मरण के बन्धनों से मुक्त हो जाता है। **जन्म व मृत्यु के बन्धनों से मुक्त होने सहित मोक्षप्राप्ति का एकमात्र मार्ग ईश्वर की उपासना व साक्षात्कार ही है। यह केवल वैदिक विधि से उपासना करने से ही उपलब्ध होता है अन्यथा सम्भव नहीं है।** सभी मनुष्यों के जीवन में सुख व दुःख दोनो ही होते हैं। मनुष्य दुःखों से बचना चाहता है परन्तु उसे दुःखों से बचने का स्थायी उपाय समझ में नहीं आता। **संसार में दुःखों से स्थाई रूप से मुक्ति का साधन ईश्वर की यथार्थ उपासना के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है।** मत-मतान्तरों में जो पूजा पाठ-व भक्ति आदि की जाती है वह यथार्थ ईश्वर की यथार्थ उपासना नहीं है।

अतः जो लोग सारा जीवन स्कूली शिक्षा लेकर धनोपार्जन व नाना प्रकार के सुखों यथा स्वादिष्ट सामिश निरामिश भोजन, यात्रा व भ्रमण, सुख के साधनों की प्राप्ति, नाच, गाना आदि में ही व्यतीत करते हैं वह एकांगी जीवन जीते हैं जिससे दुःखों से स्थाई मुक्ति नहीं हो सकती। यह स्थिति ऐसे मनुष्यों की अज्ञानता व अविद्या को प्रकट करती है। उन्हें अपने नाना प्रकार के कृत्यों का क्या-क्या परिणाम हो सकता है, यह ज्ञान नहीं होता। यदा-कदा छोटा-बड़ा दान व कुछ परोपकार कर व अन्य कोई



This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

मजहबी कार्य करके वह स्वर्ग व ऐसे कल्पित सुखों की अपेक्षा रखते हैं। ऐसा सोचना व मानना कुछ ऐसा ही है जैसे '**खूब मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन दिल बहलाने को गालिब ख्याल अच्छा है।**' हमें अनुभव होता है कि आधुनिक जीवन पद्धति का एक मात्र लक्ष्य भौतिक सुखों की प्राप्ति है जो हमें यथार्थ आध्यात्मिक सुखपूर्ण जीवन से दूर ले जाती है। हम यदि उपेक्षा आध्यात्मिक जीवन पद्धति की उपेक्षा करेंगे तो परिणाम में हम इससे मिलने वाले लाभों से वंचित होंगे। सभी मनुष्य अपने-अपने कर्मों के प्रति उत्तरदायी है। ईश्वर सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी होने के कारण से हमारे व सबके प्रत्येक कर्मो का साक्षी है। अतः कोई व्यक्ति कोई भी बुरा काम या पाप कर ईश्वर दण्ड से बच नहीं सकता। पुनर्जन्म भी अवश्यम्भावी है। अवशिष्ट कर्मों के फल अगले जन्म मनुष्य व निम्न पशु आदि योनियों में भोगने ही होंगे। ईश्वर ने हमें स्वतन्त्रता दी है हम चाहें प्रेय मार्ग को चुने जो कि प्रायः सभी कर रहे है या श्रेय मार्ग का चयन करें, जो मोक्ष व मुक्ति में ले जाता है तथा जिसे महर्षि दयानन्द व उनके कुछ अनुयायियों ने चुना था। विवेकपूर्ण मार्ग का चयन कर जीवन की उन्नति करना ही उचित है। इति।

**-मनमोहन कुमार आर्य**
**पताः १९६ चुक्खूवाला-२**
**देहरादून-२४८००१**

## वेदार्ष महाविद्यालय ११९ गौतम नगर, नई दिल्ली में उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न

**नई दिल्ली :** वेदार्ष महाविद्यालय ११९ गौतम नगर नई दिल्ली में दिनाङ्क २५ सितम्बर २०१६ को ५० नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार कराया गया। संस्थापक पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के निर्देशन में ब्रह्मचारियों का संस्कार पूर्ण वैदिक परम्परानुसार आयोजित हुआ। इस अवसर पर गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक डॉ. धर्मेन्द्र कुमार तथा डॉ. आनन्द कुमार (आई. पी.एस.) जी उपस्थित रहे। पितृ-उपदेश डॉ. धर्मेन्द्र कुमार ने नवीन ब्रह्मचारियों को दिया। डॉ. आनन्द कुमार जी ने भी नवीन ब्रह्मचारियों को गुरुकुल में रहकर गुरुकुलीय दिनचर्या में नियमितता के साथ जीने का उद्‌बोधन दिया।

अन्त में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने सभी ब्रह्मचारियों तथा आगन्तुक महानुभावों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वर्तमान में गुरुकुल ही एक ऐसी संस्था है, जो राष्ट्रियता को जागृत कर रही है तथा भारतीय संस्कृति व ऋषि परम्परा को आज तक लेकर चली आ रही है। स्वामी जी ने कहा कि आज मैं आप लोगों को बताते हुए अत्यन्त हर्ष की अनुभूति कर रहा हूँ कि हमारे गुरुकुलों से निकलने वाला एक भी स्नातक आज बेरोजगार नहीं है, जबकि आज आधुनिक शिक्षा को देने वाले किसी भी संस्थान का ऐसा रिकॉर्ड नहीं रहा होगा। तथा अन्त में गुरुकुल प्रेम व निकटवर्ती क्षेत्र से उपस्थित हुए सभी अतिथिगणों का धन्यवाद व आभार व्यक्त किया।

## ८ वीं राज्यस्तरीय योगासन प्रतियोगिता में गुरुकुल पौन्धा

दिनाङ्क ११ सिम्बर २०१६ को ऋषिकेश के गवर्नमेंट पी.जी. कॉलेज में ८ वीं राज्यस्तरीय योगासन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इस प्रतियोगिता में सम्पूर्ण उत्तराखण्ड के लगभग ६०० प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। इस प्रतियोगिता में गुरुकुल के भी सात ब्रह्मचारियों ने प्रतिभाग किया। १४ से १७ वर्ष वाले आयु वर्ग में ब्र. विपिन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। तथा ११ से १४ वर्ष वाले आयु वर्ग में अभिषेक आर्य ने तृतीय स्थान प्राप्त किया तथा इसी वर्ग में शिवम् आर्य ने सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त किया। १७-२१ वर्ष वाले आयु वर्ग में ब्र. सूर्यप्रताप ने भी सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त किया। इस प्रतिस्पर्धा में प्रथम स्थान विजेता प्रतिभागी दिसम्बर २०१६ में राँची में होने वाली प्रतिस्पर्धा में भाग लेंगे। संस्था संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी व आचार्य डॉ. धनञ्जय, आचार्य चन्द्रभूषण एवं आचार्य यज्ञवीर जी आदि ने सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ प्रदान की।



This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

# यज्ञ-माहात्म्य

❑ ब्र. सारांश आर्य...✍

**वै**दिक विचार धारा में यज्ञ(हवन) का बहुत महत्त्व है। प्रत्येक मनुष्य शुभ कार्य करने से पूर्व यज्ञ अवश्य करता है। और वह यज्ञ इसलिए करता है क्योंकि यज्ञ सबसे श्रेष्ठ कर्म है। उपनिषदों में भी कहा गया है- **यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म** साथ ही साथ इसको भारतीय परम्परा में जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अङ्ग भी बताया है। ऋषियों के द्वारा इसको क्यों इतना महत्व दिया गया है? क्यों इसको पहले प्रत्येक मनुष्य प्रातः-सायं किया करता था? इस विषय पर आगे चलकर विचार करेंगें।

यज्ञ शब्द पाणिनीय व्याकरणानुसार '**यज देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु**' इस धातु से 'नङ्' प्रत्यय करके सिद्ध होता है। जिसका अर्थ है- देव पूजा, अच्छे लोगो की सङ्गति तथा दान करना। सर्वप्रथम हम देव पूजा पर विचार करेंगे।

**देवपूजा**- शाब्दिक अर्थ के रूप में तो हम इतना ही अर्थ ग्रहण करेंगें कि देवो की पूजा करना ही देवपूजा है। लेकिन देव कौन है तथा हम किन देवों की पूजा करें? अर्थात् जो हमको देते है उनको देव कहा जाता है। ये देव आठ वसु, ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य, एक विद्युत तथा एक जीवात्मा। इन देवताओं का संवर्धन एवं संरक्षण करना हमारा परम कर्तव्य है। ये केवल अग्निहोत्र विधि से ही किया जा सकता है। इसी को देवपूजा कहा जाता है।

**सङ्गतिकरण**-सज्जनों की सङ्गति करना, उनके मार्ग पर चलना तथा अच्छे कार्यो एवं सत्सङ्गो मे बढ चढ कर हिस्सा लेना ही सङ्गतिकरण कहलाता है।

**दान**- गरीबों की सहायता करना, अच्छी जगहों पर व भले कार्यो में तन मन धन से सहायता करना, जो हमारे पास है उसका निस्वार्थभाव से देना दान कहलाता है।

यह तो हमने देवपूजा, सङ्गतिकरण व दान पर चर्चायें की किन्तु क्या हम इतनी सी बातों से सन्तुष्ट हो जाए? अपितु नही। आज संसार यज्ञ से विमुख होता जा रहा है। मानो ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वह अग्निहोत्र प्रक्रिया से इस यज्ञ-हवन से बिल्कुल अनभिज्ञ हो गया हो। मध्य काल के इस भारत वर्ष में जब यज्ञ में पशु बलि देना तथा अन्य-अन्य प्रक्रियाओं का बहुत प्रचार होने लगा तो संसार इसको हिंसावृति तथा अधिक खर्चे का साधन मानता हुआ इससे दूर हटता गया। इसी कारण देव पूजा खत्म हो गयी तथा इसका स्थान अन्य देवी देवताओं पर फुलावा चढाने ने ले लिया। अब इस विषय पर अधिक चर्चाएं न करते हुए मैं यज्ञ पर चर्चा करुंगा। हवन करने में अनेक लोगो की भ्रांतियाँ हैं कि इसमें घी, सामग्री तथा अन्य औषधीयो को मिलाने से क्या लाभ? यह तो केवल बर्बादी का साधन है, लेकिन ऐसा नहीं है। अग्नि में प्रत्येक प्रदार्थ अपने स्थूल रूप से विस्तृत रूप को प्राप्त कर लेता है। डालने से पूर्व वह पदार्थ स्थूल होता है किन्तु डालने के बाद वह सूक्ष्मरूप धारण कर लेती है। तथा उसका गुण अधिक विस्तारपूर्वक फैल जाता है। मनु महाराज ने कहा है कि-'**अग्नौ हुतं हविः आदित्यमुपतिष्ठति**' अर्थात् अग्नि में हवि डालकर वह सूक्ष्म होकर सूर्य तक फैल जाती है। जिस प्रकार अग्नि मे मिर्च को डालने से उसका गुण बहुत बढकर सर्वत्र फैल जाता है। इस सिद्धान्त को होम्योपैथी की पोटेन्सी भी पुष्ट करती है। यज्ञ के विषय में जानने से पूर्व हमको यज्ञ के चारों उद्देश्यो को जान लेना आवश्यक है। १. वैयक्तिक तथा सामाजिक वायुमण्डल को शुद्ध करना। २.वैयक्तिक तथा सामाजिक रोगो का निवारण। ३. रोगो के कीटाणुओं को नष्ट करना तथा। ४. वृष्टि (वर्षा) की कमी को दूर करना। सर्वप्रथम हम वायु मण्डल के शुद्धि करण पर



This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

चर्चा करेंगे। आज का वायुमण्डल अत्यन्त प्रदुषित होता जा रहा है। सर्वत्र कारखानो एवं वाहनों के कारण वायुमण्डल दूषित होता जा रहा है। इन सबका निवारण मेरी दृष्टि से केवल यज्ञ द्वारा ही सम्भव है क्योंकि हवन करने का सर्वप्रथम लाभ वायुमण्डल को शुद्ध करना ही है। इसके साथ-साथ यदि पर्यावरण शुद्ध हो जायेंगा तो रोगो का निवारण भी स्वयमेव हो जायेगा। लेकिन हवन के विषय में हमको दो आक्षेप अवश्य सुनने को मिलते है। पहले ये कि लकड़ियों को जलाने से कार्बनडाई ऑक्साइड गैस पैदा होती है। जो हमारे शरीर के लिए घातक है। तथा दूसरी ये कि महंगाई के जमाने में घी तो खाने को मिलता नही तो यज्ञ के लिए कहाँ से लाए? इसमें सन्देह नहीं कि हवन करने से कार्बनडाई ऑक्साइड उत्पन्न होती है। सृष्टि मे इस गैस की अत्यन्त आवश्कता है। क्योंकि पेड-पौधो का भोजन भी यही गैस है। आज संसार मे वन महोत्सव मनाए जा रहे है। तथा साथ ही साथ उनके आहार एवं उनके अत्यन्त उपयोगी भूमि एवं मौसम पर भी ध्यान दिया जा रहा है। इसकी कमी को पूरा करने के लिए यज्ञ का होना अत्यन्त आवश्यक है। और रही इस गैस की बात तो इसके प्रभाव को रोकने के लिए यज्ञ में प्रचूर मात्रा में बहुत प्रकार की औषधियाँ डाली जाती हैं।जिस प्रकार केसर, कस्तूरी, चन्दन, ईलायची, जायफल, तुलसी, गुग्गल तथा लौंग आदि औषधियों को यज्ञ मे डालने से ये कार्बनडाई ऑक्साइड के हानिकारक प्रभाव को रोककर इस गैस के माध्यम से इनका गुण अधिक विस्तारित हो जाता है। इन सुगन्धित पदार्थों एवं रोगाणु नाशक औषधियों को यज्ञ में डालने से इनकी सुगन्धि सर्वत्र फैल जाती है, जिससे पर्यावरण शुद्ध होता है। यह तो बिलकुल अनुभव के साथ जाना जा सकता है। कि जहाँ पर केवल इस कार्बनडाई ऑक्साइड का बाहुल्य हो, वहाँ पर बैठने से या तो चक्कर आ जाते है, या बेहोशी के कारण व्यक्ति गिर पडता है। किन्तु आश्चर्य की बात तो ये है कि यज्ञशाला के पास तो यज्ञ द्वारा भरपूर मात्रा मे इस गैस का उत्पादन होता है, तथापि मनुष्य इन औषधियों के डालने से उस स्थान पर सुख पूर्वक तथा सात्विक मन से सुगन्धित सांस लेता है, तथा उसको बिल्कुल भी कार्बनडाई ऑक्साइड का आभास नही होता। इसका अभिप्राय यही है-इस बात से ना नही किया जा सकता कि हवन से इस गैस का उत्पादन होता है, उसकी अपेक्षा उसके विनाशकारी अंश को नष्ट करके औषधियों के स्वास्थ्यकारी अंश को प्रभुत्व मात्रा में बढा दिया जाता है। दूसरी बात रही महँगाई की तो यह प्रश्न उठ जाता है कि वर्त्तमानयुग के आर्थिक संकट में जब लोगो को खाने के लिए ही घी एवं अन्य औषधियाँ प्राप्त नही होती तो वह यज्ञ में डालने हेतु घी कहाँ से लाएगा। यह प्रश्न युक्तिसङ्गत है। लेकिन इस कार्य पर व्यक्ति तथा समाज का जो आर्थिक व्यय होगा, उसकी तुलना में व्यक्ति तथा समाज को स्वास्थ्य तथा अन्य दृष्टियों से लाभ होगा। इसी विचारधारा में चलकर हमको यज्ञ करना चाहिए। दूसरी बात यह भी है कि यज्ञ में औषधियों एवं सुगन्धित पदार्थों को डालने से हमारे अपने तथा सामाजिक रोगों का निवारण भी होता है। उदाहरणार्थ बरसात के समय मे घरों में सीलन हो जाती है। जिससे पूरे घर में दुर्गन्ध हो जाती है। इस सीलन दुर्गन्ध एवं नमी के कारण गठिया ज्वर एवं जुकामादि रोग हो जाते है। यज्ञ करने से इन रोगों का निवारण होता है इसी प्रकार यज्ञ में तुलसी डालने से मलेरिया रोग का निवारण होता है। उदाहरणस्वरूप पंढरपुर के बिठोवा मंदिर के आस-पास बहुत से तुलसी के पौधे लगे हुए है। जिस कारण से वहाँ आस-पास के लोगों को मलेरिया नहीं होता है। इसी प्रकार अन्य औषधियाँ एवं सुगन्धित पदार्थ जैसे-कस्तूरी, जायफल, केसर, चन्दन, जटामासी, इलायची, गुग्गल, शक्कर गिलोय एवं लौंग ये सब ऐसी औषधियाँ है जिनके यज्ञ में डालने से रोगों का नाश तथा वायुमंडल शुद्ध होता है एवं साथ-साथ रोगों के कीटाणुओं का भी अन्त होता है और यह वृष्टि (वर्षा) की कमी को भी पूरा करती है। डॉ. सत्यप्रकाश अपनी पुस्तक 'Agnihotra'' मे लिखते है कि यज्ञ में सामग्री एवं घी डालने से फौरमैल्डीहाइड नामक गैस उत्पन्न होती है, तथा लिखते है कि- यज्ञ से उत्पन्न फौरमैल्डीहाइड नामक गैस



This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

कुछ अंश तक कार्बनडाई ऑसाइड को अपने में तब्दील कर देती है। १८८३ में ल्यु एवं फिशर ने एक शोध किया एवं उसका ऐसा परिणाम निकाला - यह फौरमैल्डीहाइड गैस शक्तिशाली तथा कीटाणु नाशक है तथा यह अनेक पदार्थों को सडने-गलने से बचा लेती है। यह बात विशेष रूप से ध्यान करने की है कि इस गैस का प्रभाव भी तभी होता है? जब वह पानी के वाष्पो के साथ हो अन्यथा इसका प्रभाव नही होता- यही कारण है कि अग्निहोत्र करते समय पानी का भरपूर मात्रा में प्रयोग होता है। कभी आचमन कभी अंग स्पर्श तो कभी जल सिंचन इत्यादि। अब आप ही विचार कर सकते है कि हमारे ऋषियो ने कितना विचार-विमर्श करके इस पद्धति को रचा है। इस कारण यह रोगाणुनाशक फोर्मेल्डीहाइड गैस पूर्णरूप से अपना प्रभाव करती है। इसके अलावा सामग्री से अन्य तत्त्व भी उत्पन्न होते है। उदाहरणार्थ यज्ञ में नारियल आदि डालने से कुछ तेलकण वाष्परूप में निकलते हैं। जिनके विषयों में प्रेक्षणों से सिद्ध हुआ है कि उनके कारण सर में जुएं नही पडतीं अगर तेल ज्यादा देर तक वाष्प में रहे तो मर जाती हैं। इसमे कोई संदेह नही कि हर प्रकार की सामग्री भिन्न-भिन्न रोगों का निवारण नहीं करती है। अग्नि मे औषधियाँ डालने से रोगों का प्रतिकार होता है। हमें इस बात की गवेषणा करनी होगी कि किस-किस पदार्थ को डालकर हम कौन-कौन से रोग में लाभ प्राप्त करते है। हवन से फोर्मेल्डीहाइड गैसें पैदा होती हैं, अनेक गन्धवाली गैसे उत्पन्न होती है तथा इसके साथ ही साथ कार्बनडाइऑक्साइड भी पैदा होती है। जो हमारे शरीर के लिए हानिकारक सिद्ध होती है। बेकार में कार्बनडाइऑक्साइड पर बहुत सी बौछारें की जाती है। यद्यपि इससे जीवनशक्ति को तो लाभ नही होता, तो भी यह कोई भयानक विष भी नही है। हम रोज सोडा, कोक, लिमका आदि पीते है इनमें कार्बनडाइऑक्साइड गैस ही तो होती है। रसोईघरो में हम हर रोज चूल्हा जलाते है। तथा घण्टो वहाँ काम करते है। तो क्या हम लोग मर जाते हैं? यज्ञ की यह विशेषता है कि यह सुगंधित तथा शुद्ध ऑक्सीजन उत्पन्न करती है। एक बार के यज्ञ से अस्सी लाख टन ऑक्सीजन उत्पन्न होता है। सच्चाई तो यह है कि आग जलने के समय जो रोग नाशक गैसे उत्पन्न होती है उनको बहुत उपर तक उठाकर व्याप्त अंतरिक्ष में सर्वत्र फैलाने का कार्य कार्बनडाईऑक्साइड का ही है। प्राय: देखा जाता है कि जब बडे- बडे यज्ञ कई दिन तक होते है तब यज्ञ जनित तत्त्वों को यह गैस इतनी ऊपर उठा कर ले जाती है। कि यज्ञ करते-करते आसमान बादलों से घिर जाता है और वर्षा होने लग जाती है। यह तो हर किसी के अनुभव की बात है। जब प्रचण्ड आग लगती हैं जंगल के जंगल धधक उठते है। टनो कार्बनडाईऑक्साइड उत्पन्न होता है, तब वर्षा अवश्य आ जाती है। इन सभी उदाहरणो से यह सिद्ध होता है कि यज्ञ द्वारा वृष्टि की कमी को दूर किया जा सकता है। इन सभी बातों को जानकर हमको पता चलता है कि यज्ञ हमारे एवं पर्यावरण तथा वनस्पतियों के लिए अत्यन्तावश्यक है क्योकि यज्ञ द्वारा पर्यावरण शुद्ध होता है। तथा रोगों एवं रोगो के कीटाणुओ का सर्वनाश होता है। आधुनिक संसार में बहुत प्रदूषण फैला हुआ है। जिस कारण वायु में, जल में, तथा भूमि में भी विष घुलता जा रहा है। इन सभी को यज्ञ द्वारा ही रोका जा सकता है। यदि इन भावनाओ को व्यक्ति दिल में बसा लेगा तो एक दिन ऐसा आएगा कि जिस दिन प्रत्येक घर में, गाँव में, कस्बो में, नगरों में, तथा प्रत्येक सरकारी जगहों पर यज्ञ अवश्य होगें। इसीलिए मैं चाहूँगा कि जिस प्रकार योग दिवस मनाया जाता है, तथा अन्य-अन्य अन्तराष्ट्रिय दिवस मनाए जाते है उसी प्रकार एक दिन यज्ञदिवस भी मनाया जाये। मैं आशा करता हुँ कि प्रत्येक जन-जन से कि आप मेरी यज्ञ दिवस रूपी अग्नि को ऊपर उठाने वाली घी की आहुति अवश्य प्रदान करेंगे अवश्य अन्तराष्ट्रिय यज्ञदिवस के लिए प्रयास करेंगें। ताकि पुन: हम मनुमहाराज के वाक्य को दोहरा सकें-

**एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।**
**स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः।।**

**-शास्त्री प्रथम वर्ष, गुरुकुल पौन्धा, देहरादून**



This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

# संस्कृतभाषा महर्षिदयानन्दश्च

❑ ब्र. भूपेन्द्रकुमारः...✍

भाषाया अस्माकं जीवने बहु महत्वं वर्तते। प्राचीनकालत अद्यावधिपर्यन्तमस्मिन् जगति अनेकानां भाषाणां प्रयोगो दृश्यते। तासु सर्वाषु भाषासु संस्कृतभाषा अस्माकं समेषां जीवनस्य कृते सर्वोत्तमा सर्वोत्कृष्टतामया वर्तते।

संस्कृतशब्दः 'सम्' उपसर्गपूर्वकं डुकृञ्करणे इति धातोः 'क्त'प्रत्यये कृते सिद्ध्यति। सम्यक् कृतं संस्कृतमिति कथ्यते अर्थात् शुद्धं परिष्कृतं व्याकरणादिदोषरहितं यत्तद् संस्कृतम्। इयमेव भाषा देववाणी, सुरवाणी, गीर्वाणवाणी इत्यादयः नाम्नापि ज्ञायते। एतानि नामानि एव अस्याः भाषायाः महत्त्वं ज्ञापयन्ति। अस्य महत्त्वं विज्ञाय केनापि उक्तम्-

**अमृतं मधुरं सम्यक्संस्कृतं हि ततोऽधिकम्।**
**देवभोग्यमिदं यस्माद् देवभाषेति कथ्यते।।**

जगति याषां भाषाणां प्रयोगो भवति ताषां सर्वाषामपि भाषाणां जननी संस्कृतमेवास्ति, एतद् सुपरिचितमेव। यादृशं महद् साहित्यं संस्कृतभाषायाः विद्यते न तादृशमन्यासां भाषाणाम्।

प्राचीनकाले यदा सृष्टिरभूत् तावदेव संस्कृतभाषा लोके प्रचलिता लोकव्यवहारस्य भाषा चासीत्। अस्यैव प्रमाणं यत्सर्वमपि पुरातनं साहित्यं वेदाः, उपनिषदः, रामायणं, महाभारतम् इत्यादयः संस्कृतभाषायामेव उपलभ्यन्ते। न केवलं भारते एवमपितु सम्पूर्णेऽपि विश्वे संस्कृतस्य लोकव्यवहार आसीत्। अस्यापि प्रमाणं वाल्मीकिरामायणे वर्णितमस्ति-यदा रामभक्तः सेवको हनुमान् सीतां प्रति गत्वा तस्यै कनकमयीं मुद्रां ददौ तदा स चिन्तयति स्म यत्कस्यां भाषायां सीतया सह वार्तां करवाणि। तस्य हनुमतः चिन्ता आसीत् - **यदि वाचं वदिष्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम्।**
**रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति।।** (वा.रा.)

अनेनोदाहरणेन सिद्ध्यति यत् रावणः तस्य प्रजा च संस्कृतज्ञः संस्कृतवाङ्मुखरोऽपि आसीत्। तदैव तु कथितमस्ति यत् 'भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा'।

एतावद्दीर्घमेतिह्यं नीत्वापि संस्कृतभाषा शनैः-शनैः स्वयमेव ऐतिहासिका भाषाभूत्। मुगलानामाक्रमणेन नालन्दातक्षशिलादयः विश्वविख्याताः संस्कृतस्य केन्द्राः समाप्ताः जाताः। अन्याषां भाषाणां प्रचारात् संस्कृतस्य च काठिन्येन संस्कृतस्य ह्रासः जातः।

एतादृशे संस्कृतस्यान्धकारे दयानन्दनाम्ना एकः दीपः प्रज्ज्वलितः। दयानन्देन स्वभाषायां स्वग्रन्थेषु च सर्वत्रैव संस्कृतभाषा प्रयुक्ता। विलुप्तप्रायसंस्काराणां कृते दयानन्देन संस्कारविधिः नाम्ना पुस्तकं रचितम्। यस्मिन् च गर्भाधानादारभ्यन्त्येष्टिपर्यन्तं षोडशसंस्काराणां स्पष्टं वर्णनमस्ति। लौकिकल्याणभावनया परिपूर्णदयानन्दः स्वग्रन्थे लिखति-'**वेदस्य मुलमन्त्राणां व्याख्यानं लोकभाषया।**
**क्रियते सुखबोधाय ब्रह्मज्ञानाय सम्प्रति।** (आर्याभिविनय)

दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह। स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रो स्वरतोऽपराधात् इति सम्मुखीकृत्य दयानन्देन 'सौवरः' इति पुस्तकं निर्मितम्। यस्मिन् स्वरदोषनिवारणाय नियमाः वर्णिताः येन संस्कृताध्येतारः छात्राः दोषयुक्ताः न भवेयुः। येषां वेदानां सायणादिभि अनर्थः कृतः तेषां स्वामिना दयानन्देन सम्यक्तर्कसम्मतं शुद्धं भाष्यं लोकोपकारकाय कृतम्। येन वेदानां सम्यक्सुस्पष्टञ्चार्थं लोकाय शिवं भवेत्। भावनयानया दयानन्देन स्वग्रन्थे लिखितम्-

**संस्कृतप्राकृताभ्यां यद्भाषाभ्यामन्वितं शुभम्।**
**मन्त्रार्थवर्णनं चात्र क्रियते कामधुङ्मया॥** (ऋग्वेदादि.)

एवं स्वामिदयानन्देन लोकमङ्गलभावनयानेकानि पुस्तकानि संस्कृतार्यभाषयो रचितानि। तेषु 'सत्यार्थप्रकाशः' इति दयानन्दस्यामरकृतिरस्ति। अस्मिन्नेव क्रमे व्यवहारभानुः, वर्णोच्चारणशिक्षा, पञ्चमहायज्ञविधिः, स्त्रैणताद्धितः, नामिकः, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका इत्यादिनि **अनेकानि पुस्तकानि दयानन्देन विरचितानि।**

**शेषाग्रिम पृष्ठे (१८)**



This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

# जीवोत्पत्तिविवेचनम्

❑ कैलाशार्यः...✍

आत्मा हि अजरोऽमरश्च वर्तते। स पूर्वसञ्चितैः कर्मभिः मानवपशुकीटादियोनिषु जन्म लभते। गीतायां भगवता श्रीकृष्णेन प्रोक्तमपि –

**नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।**
**न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।**

सर्वेषामपि जीवानां पुनर्जन्म भवति। स पूर्वजन्मकृतैः कर्मभिः आगामियोनिं लभते। पुनर्जन्मविषये तथा गर्भस्थितिविषये एकेन दृष्टान्तेन यास्काचार्योऽपि निरुक्ते निर्दिदेश–

**मृतश्चाहं पुनर्जातो जातश्चाहं पुनर्मृतः।**
**नानायोनिसहस्राणि मयोषितानि यानि वै।।**
**आहारा विविधा भुक्ताः पीता नानाविधाः स्तनाः।**
**मातरो विविधा दृष्टाः पितरः सुहृदस्तथा।।**
**अवाङ्मुखः पीड्यमानो जन्तुश्चैव समन्वितः।**

जीवोऽयं प्रारब्धकर्मवशतो देहावाप्तये पुरुषस्य वीर्याश्रितो भूत्वा स्त्रीगर्भं प्रविशति। तत्र च जरायुणा आवृत्तः तिष्ठति। अस्मिन् विषये यजुर्वेद मन्त्रमपि उपदिशति यत्–

**रेतो मूत्रं विजहाति योनिं प्रविशदिन्द्रियम्।**
**गर्भो जरायुणवृतऽउल्बं जहाति जन्मना।।**

गर्भे जीवः पूर्वजन्मनां कर्मणामनुसारेणैव जन्म लभते। सुश्रुते उच्यते–

**कर्मणा चोदितो येन तदाप्नोति पुनर्भवे।**
**अभ्यस्ताः पूर्वदेहे ये तानेव भजते गुणान्।।**

गर्भं प्रविश्य अयमात्मा पाञ्चभौतिकं देहमवाप्य क्रमशः वर्धते। आनवमासं वर्धित्वा पूर्णो भवति। वैद्यकग्रन्थे सुश्रुते विशेषतया गर्भस्थितिविषये वर्णनं कृतम्। तत्र प्रथमे मासि कललं जायते, द्वितीये शीतोष्मानिलैरभिप्रपच्यमानानां महाभूतानां संघातो घनः संजायते, यदि पिण्डः पुमान् स्त्री चेत् पेशी, नपुंसकं चेदर्बुदमिति। तृतीये हस्तपादशिरसां पञ्च पिण्डका निर्वर्तन्तेऽङ्गप्रत्यङ्गविभागश्च सूक्ष्मो भवति, चतुर्थे सर्वाङ्गप्रत्यङ्गविभागः प्रव्यक्तो भवति, गर्भहृदयप्रव्यक्ति– भावाच्चेतनाधातुरभिव्यक्तो भवति कस्मात्? तत्स्थानत्वात्। तस्माद् गर्भश्चतुर्थे मास्यभिप्रायमिन्द्रियार्थेषु करोति। पञ्च– मे मनः प्रबुद्धतरं भवति, षष्ठे बुद्धिः, सप्तमे सर्वाङ्गप्रत्यङ्गविभागः प्रव्यक्ततरः, अष्टमेऽस्थिरीभवत्योजः, तत्र जातश्चेन्नजीवन्निरोजस्त्वान्नैर्ऋतभागत्वाच्च, नवमदशमैकादशद्वादशानाम् अन्यतमस्मिन् जायते अतोऽन्यथा विकारी भवति।

गर्भेजीवः मात्रा भुक्तेन अन्नरसेन वर्धते। तस्मिन् समये मात्रा पौष्टिकमन्नं खादितव्यम्। अपौष्टिकेनान्नेन न जीवस्य सम्यक्तया वृद्धिर्भवति। तस्य अबले जाते न पुनरसौ बलवान् भवेत्। गर्भस्थजीवस्य विषये गुरुडपुराणे वर्णनमस्ति यत्–

**श्रीपतिं जगदाधारमशुभमक्षयकारकम्।**
**व्रजामि शरणं विष्णुं शरणागतवत्सलम्।।**
**त्वन्मायामोहितो देहे तथा पुत्रकलत्रके।**
**अहमभिमानेन गतोऽहं नाथ संसृतिम्।।**
**कृतं परिजनस्यार्थे मया कर्म शुभाशुभम्।**
**एकाकी तेन दग्धोऽहं गतास्ते फलभागिनः।।**
**यदि योन्याः प्रमुच्येऽहं तत्स्मरिष्ये पदं तव।**
**तमुपायं करिष्यामि येन मुक्तिं व्रजाम्यहम्।।**
**विण्मूत्रकूपे पतितो दग्धोऽहं जठराग्निना।**
**इच्छन्नितो विवसितुं कदा निर्यास्यते बहिः।।**

गर्भस्य स्वस्य पिपासा बुभुक्षा वा न भवति। तस्य जीवनं मातुरधीनं भवति। सूक्ष्मावस्थायां गर्भे जीवः मातुरश्रितो भूत्वा रसोष्मणा जीवति। स्थूलावस्थायां च नाभिनालेन पौष्टिकमुपगृह्णाति। गर्भस्य नाभिस्थले नाडी



This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

भवति। तस्याः सम्बन्धः अपरया सह भवति। तस्याः अपरायाः सम्बन्धः मातु हृदयेन सह भवति। तया एव अपरया मातुः शिरासु भ्रमद् रक्तं रसो वा जीवसमीपं गच्छति। स रस एव गर्भाय बलं ददाति। रसोऽयं गर्भिण्यां भागत्रये विभजति। एकस्तु स्त्रीशरीरपुष्टये, द्वितीयः क्षीरोत्पत्तये तृतीयश्च गर्भवृद्धये भवति। एव जीवोऽयंगर्भे जीवति।

यदा जीवः गर्भे वसति, तदा तस्याः प्रत्येकं शुभाशुभस्य कर्मणः परिणामः गर्भस्थे जीवे भवति। यदा यदा माता यद् यद् आचरति, तस्यसर्वस्यापि प्रभावो गर्भस्थे जीवे भवति। अतः एव उच्यते यत् गर्भिणी सदैव स्वस्था भवेत्। सदा-चारिणी, पथ्यभोजिनी, भद्रदर्शिनी च स्यात्। सात्विकमेव चिन्तनं सदा कुर्यात्। तामसं परिवर्जयेत्। शारीरिकश्रमोऽल्पी-यानेव करोतु। एवं नवमासपर्यन्तं जीवः वृद्धिं गच्छति। या माता आयुर्वेदानुसारमुपर्युक्तवर्णनानुसारं च आचरेत्, तस्याः शिशुः बुद्धिमान्, तेजस्वी निरामयश्च भवेत्।

यजुर्वेदे मन्त्र उपदिशति यत्-

**एजतु दशमास्यो गर्भो जरायुणा सह।**
**यथायं वायुरेजति यथा समुद्र एजति।**
**एवायं दशमास्यो असृज्जरायुणा सह ।।**

मन्त्रेऽस्मिन् दशमास्यः गर्भः वर्णितः। अर्थात् दशमास्य गर्भ एव जायमानः श्रेयस्करो भवति। दशमास्यस्य एव शिशोर्जन्म अस्मिन् संसारं अभ्युदयाय भवति। एवं क्रमेण जन्म प्राप्तासौ सततं जीवन् वर्धते।

**स्नातकः-गुरुकुल पौन्धा,**
**देहरादून (उ.ख.)**

**पूर्वपृष्ठस्य भागः (१८)** -

संस्कृतभाषायाः उत्थाने महर्षिदयानन्दस्य योगदानमतीव महत्त्वपूर्णं चिरस्मरणीयं च वर्तते। दयानन्देन गुरुकुलपद्धतिं विनिर्मित्य संस्कृतस्य जीर्णोद्धारं कृतम्।

परन्तु अहो दुर्भाग्यमस्माकं यत् एतादृशीं विश्वाह्लादीनिं संस्कृतभाषां त्यक्त्वा वयमांग्लभाषां प्रति धावाम इति चिन्तनीयम्। वयं स्वभाषां प्रति जागरुकाः भवेमः, येन संस्कृतभाषा पुनरुन्नतिं सर्वाषां भाषाणां च जननीपदमलंकुर्यात्।

**- शास्त्रिद्वितीयवर्षम्,**
**गुरुकुलपौन्धा, देहरादूनम् (उ.ख.)**

## उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी की शास्त्रीय प्रतिस्पर्धा में गुरुकुल पौन्धा

६-७ सितम्बर २०१६ को उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी की ओर से खण्डस्तरीय शास्त्रीय प्रतिस्पर्धा का आयोजन किया गया। इस खण्डस्तरीय प्रतिस्पर्धा का आयोजन विकासनगर खण्ड के अन्तर्गत भाऊँवाला में श्री गुरु राम राय इन्टर कॉलेज में किया गया। इस स्पर्धा में गुरुकुल पौन्धा, देहरादून ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। 'राष्ट्रियशिक्षानीतौ संस्कृतमनिवार्यं भवेत्' इस विषय पर संस्कृत वाद-विवाद प्रतिस्पर्धा के वरिष्ठवर्ग में ब्र. अङ्कित आर्य तथा ब्र. कैलाश आर्य ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कनिष्ठ वर्ग की संस्कृत वाद-विवाद प्रतिस्पर्धा के 'स्वच्छताभियानशासनदायित्वम्' विषय में ब्र. त्रिजकिशोर आर्य तथा ब्र. भानुप्रताप आर्य ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। आशुभाषण की प्रतियोगिता के वरिष्ठ वर्ग में ब्र. रवि आर्य ने प्रथम तथा कनिष्ठ वर्ग में ब्र. आदित्य ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। श्लोकोच्चारण प्रतिस्पर्धा के वरिष्ठ वर्ग में ब्र. दिनेश आर्य ने प्रथम तथा विकसित आर्य ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कनिष्ठवर्ग श्लोकोच्चारण में ब्र. देवव्रत आर्य ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस प्रतिस्पर्धा में प्रथम-द्वितीय स्थान प्राप्त छात्रों का जिलास्तरीय प्रतिस्पर्धा के लिए चयन किया गया।

सभी विजेता छात्रों को आचार्य डॉ. धनञ्जय जी, आचार्य चन्द्रभूषण व आचार्य यज्ञवीर जी आदि ने अपना आशीर्वाद दिया और जिला तथा राज्यस्तरीय प्रतिस्पर्धा के लिए शुभकामनाएँ दी।



This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

# सामान्यज्ञान-दर्पणम्

❑ अङ्कित आर्य...✍

*<u>**नोट :** यह '**सामान्यज्ञान-शिक्षणम्**' नामक पाठ विद्यार्थियों की आगामी परीक्षाओं को ध्यान में रखकर शुरु किया गया है, ये प्रश्न विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं से अवतरित हैं।</u>*

**प्र.१ वेग कैसी राशि है?**

उ.- सदिश राशि है।

**प्र.२ संविधान के प्रारूप पर अन्तिम वाचन कब समाप्त हुआ?**

उ.- २६ नवम्बर १९४९ को अन्तिम वाचन समाप्त हुआ था।

**प्र.३ कौन-सा तत्व सबसे ज्यादा सक्रिय होता है?**

उ.- पोटैशियम नामक तत्व सबसे ज्यादा सक्रिय होता है।

**प्र.४ किस स्थान पर बुद्ध ने पाँच संन्यासियों के साथ संघ की स्थापना की?**

उ.- सारनाथ नामक स्थान पर।

**प्र.५ सौरमण्डल की खोज किसने की?**

उ.- कॉपरनिकस ने सौरमण्डल की खोज की।

**प्र.६ भारत में निर्मित पहला उपग्रह प्रक्षेपण वाहन कौन-सा था?**

उ.- एस.एल.वी. नामक था।

**प्र.७ राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग किस मन्त्रालय के अधीन है?**

उ.- स्वास्थ्य मन्त्रालय के अधीन होता है।

**प्र.८ व्रजयान बौद्ध धर्म में बुद्ध/बोधिसत्व की संगिनी को क्या कहा जाता था?**

उ.- व्रजयान बौद्ध धर्म में बुद्ध/बोधिसत्व की संगिनी को तारा कहा जाता था।

**प्र.९ ८० प्रतिशत से अधिक कोशिकाओं में पाया जाने वाला पदार्थ कौन-सा है?**

उ.- जल है।

**प्र.१० संविधान सभा द्वारा संविधान को कब पारित किया गया?**

उ.- २६ नवम्बर १९४९ को संविधान सभा द्वारा संविधान पारित किया गया था।

**प्र.११ न्यूटन की गति का प्रथम नियम क्या कहलाता है?**

उ.- प्रथम नियम जड़त्व का नियम है।

**प्र.१२ कलिंग युद्ध का वर्णन अशोक के किस शिलालेख में है?**

उ.- तेरहवें शिलाखेल में कलिंग युद्ध का वर्णन हैं।

**प्र.१३ विश्व प्रसिद्ध पेंटिंग 'मोनालिसा' किसकी कृति है?**

उ.- 'लियोनार्दो द विंसी' की कृति है।

**प्र.१४ सौरमण्डल का सबसे ऊँचा पर्वत 'निक्स ओलंपिया' किस ग्रह पर स्थित है?**

उ.- मंगल ग्रह पर स्थित है।

**प्र.१५ शिशु मृत्यु-दर में कितने वर्ष की आयु के पूर्व मृत शिशु को शामिल किया जाता है?**

उ.- एक वर्ष के पूर्व शामिल किया जाता है।



This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

# संस्कृत-शिक्षणम्

❑ ब्र. त्रिजकिशोरार्यः...✍

अयि सुधियः पाठकाः! संस्कृतस्य शिक्षणं न कठिनम्। संस्कृतं तु अतीव सरलं मधुरं च वर्त्तते। आगच्छत वयं प्रयोगं कृत्वा पश्यामः। एतस्मिन् विभागे व्यावहारिकज्ञानाय सरलानि कानिचन वाक्यानि सरला नियमाश्च प्रदीयन्ते। अत्र ध्यानेन पठित्वा भवन्तः अपि संस्कृतेन व्यवहारं कर्तुमर्हन्ति।

**नियमः -**

अस्माभिः अधुना पर्यन्तं कारकप्रकरणं समासप्रकरणञ्च अधीतम्। संस्कृतवाङ्मये संस्कृतवाक्येषु सन्धीनाम् अतिप्रयोगः दृश्यते। अतः संस्कृतवाक्यानां सुललितमनोहररचनायाः कृते वयमधुना सन्धिविषयमधीमहे। तर्हिः सर्वप्रथमं जानीमहे यत् को नाम सन्धिरिति? परस्परं वर्णानामत्यधिकसन्निकर्षः सन्धिरित्युच्यते। सन्धिः त्रिधा भवति-स्वरः व्यञ्जनः विसर्गश्च (अच्,हल्,विसर्गश्च)। अधुना वयं ष्टुत्वसन्धिं जानीमहे-

## व्यञ्जन-सन्धिः (ष्टुत्वसन्धिः)

**स्तोः श्चुना श्चुः** (८/४/४०)

यदा तवर्गात् पूर्वः या पश्चात् शकारः अथवा चवर्गः स्यात् तदा सकारस्य शकारः, तवर्गस्य चवर्गः आदेशो भवति, संहितायां विषये। सरलार्थमेव जानीमहे यत् - तकारस्य चकारः, दकारस्य जकारः, धकारस्य झकारः, नकारस्य ञकारः, सकारस्य शकारः आदेशाः भवन्ति।

**यथा-**

| | |
|---|---|
| सत्+चरितम्=सच्चरितम् | सद्+जनः=सज्जनः |
| शार्ङ्गिन्+जयः=शार्ङ्गिञ्जयः | हरिस्+शेते=हरिश्शेते |

**अभ्यासार्थः-**

| | | |
|---|---|---|
| रामस्+च= ? | कस्+चित्= ? | उद्+ज्वलः= ? |
| हरिश्+सेते= ? | उत्+चारणम्= ? | बृहद्+झरः= ? |

**शब्दार्थः** (वृक्षाणां फलानां नामानि) -

| **आर्यभाषायाम्** | | **संस्कृतभाषायाम्** | **आर्यभाषायाम्** | | **संस्कृतभाषायाम्** |
|---|---|---|---|---|---|
| आँवला | = | आमलकी | करील | = | करीरः |
| आक | = | अर्कः | खैर | = | खदिरः |
| आम | = | रसालः, आम्रः | गूगल | = | गुग्गुलः |
| एरण्ड | = | एरण्डः | चिरचिटा | = | अपामार्गः |
| कदम्ब | = | नीपः | चीड़ | = | भद्रदारुः |



This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm